IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दिल्ली घराने के उस्ताद लतीफ अहमद खां साहब का जीवन-परिचय

आरती गुप्ता (शोधार्थिनी)

डॉ शिवेंद्र प्रताप त्रिपाठी (असिस्टेंट प्रोफेसर)

कला संकाय, संगीत विभाग

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टिट्यूट, आगरा

जन्म तिथि और स्थान-

दिल्ली घराने के यशस्वी तबला वादक उस्ताद लतीफ अहमद खां का जन्म सन् 1942 ई में दिल्ली में चांदनी महल के पास सुईवालान में एक व्यावसायिक संगीतज्ञ के परिवार में हुआ था।

इनके जन्म के विषय में उस्ताद गुलाम हैदर एवं उस्ताद आसिफ अली खां का मत- लतीफ अहमद खां साहब का जन्म आगरा में हुआ था और उनके जन्म के पश्चात इनका परिवार दिल्ली में चांदनी महल में सुईवालान नामक स्थान पर आकर रहने लगा।

पारिवारिक पृष्ठभूमि- खां साहब के पिता का नाम मोहम्मद बख्श था। इनके पिता आगरा के बहुचर्चित संगीत सारंगी वादकों में से एक थे। इनकी माता का नाम रोशन बेगम था जो दिल्ली की रहने वाली थी। जब खां साहब मात्र 10 वर्ष के थे तब इनके पिता की मृत्यु हो गई। पिता के निधन के पश्चात आपका पालन- पोषण आपके ननिहाल वालों ने किया। खां साहब पांच भाई- बहन थे। भाई- बहनों में सबसे बड़ी फहिमन बेगम थी। फहिमन बेगम से छोटे और भाइयों में

सबसे बड़े अल्लादियां खां थे। जो कि एक अच्छे वायलिन वादक थे। जिन्हें ए.डी. भारती के नाम से संबोधित किया जाता था। इनसे छोटे लतीफ अहमद खां हुए, इनसे छोटे चांद भारती जो मौलावाला नाम से प्रसिद्ध थे। इन ससबसे छोटे रोशन जमील अहमद थे जो कि एक कुशल गज़ल गायक हैं। वर्तमान में पांचों भाई बहनों में सिर्फ जमील अहमद खां ही जीवित हैं जिन्हें नन्हा कह कर बुलाते हैं।

वैवाहिक जीवन- उस्ताद लतीफ़ अहमद का विवाह खुर्शीद बेगम के साथ हुआ जो बहुत नेक औरत थी। उस्ताद लतीफ़ खां को खुर्शीद बेगम से चार संतानें हुईं। जिसमें दो पुत्र और दो पुत्रियां हुई। इनकी सबसे बड़ी बेटी याश्मीन हुई जिनका विवाह उस्ताद ज़फर अहमद खां के बेटे राशिद खां से हुआ जो बहुत अच्छा तबला बजाते हैं। याश्मीन के पश्चात अकबर लतीफ का जन्म हुआ जो वर्तमान में कुशल तबला वादक हैं। इनके बाद शाहीन हुई जिनका विवाह प्रसिद्ध वायलिन वादक उस्ताद जहूर अहमद के पुत्र परिवेज़ खां जो कि एक गायक हैं, से हुआ। भाई-बहनों में सबसे छोटे बाबर लतीफ हुये जो कि आजकल तबला मंच प्रस्तुति दे रहे हैं।

संगीत शिक्षा एवं गुरु- उस्ताद लतीफ़ खां साहब एक सांगीतिक परिवार से संबंध रखते थे। खां साहब के पिता प्रसिद्ध सारंगी वादकों में से एक थे, खां साहब की माता भी संगीत की बहुत शौकीन थी। अतः खां साहब को बचपन से ही घर में सांगीतिक वातावरण प्राप्त हुआ। खां को तबले से इतना प्रेम था कि लोग बताते हैं जब वे स्कूल के लिये जाते थे तब स्कूल में जाने के बजाय अपने उस्ताद के यहां चले जाते थे और घंटो तबला सुनते और सीखते थे। उस्ताद लतीफ खां साहब जब मात्र 3 वर्ष के थे तभी वे अपने चाचा के घर में रखा हुआ तबला पीटते रहते थे। वे मात्र 3 वर्ष की आयु में ही तबले का सर्वश्रेष्ठ पाठ 'धाधा तिट धाधा तूना' ठीक तरह से बोलने लगे थे। उस्ताद लतीफ खां साहब की तबले की इसी रूचि देखते हुए इनके ननिहाल वालों ने मात्र तीन या चार वर्ष की उम्र में ही इनको दिल्ली घराने के खलीफा उस्ताद गामी खां साहब की शिष्य परंपरा में तबले की शिक्षा दिलवाना प्रारंभ कर दी। उस्ताद लतीफ़ खां साहब को गंडा गामी खां साहब ने बांधा था परंतु कुछ वर्ष पश्चात् जब गामी खां साहब पाकिस्तान चले गए और उनकी मृत्यु हो गई तत्पश्चात् लतीफ खां साहब की शिक्षा गामी खां साहब के भाई मुन्नू खां, पुत्र इनाम अली खां साहब द्वारा उनके घर में रहकर हुई। इस प्रकार 1952 में खां साहब की विधिवत शिक्षा प्रारंभ हुई और मुन्नू खां और ईनाम अली खां जैसे आचार्य से 10 वर्ष तक शिक्षा ग्रहण की। अपनी इसी सतत् साधना के बल पर शीघ्र ही आप प्रतिभाशाली तबला वादक के रूप में पहचाने जाने लगे।

संगीत शैली और शानदार करियर- लतीफ़ खां साहब दिल्ली घराने के उत्कृष्ट तबला वादक हुए। बचपन से ही खां साहब अपनी कला में अद्भुत थे। क्योंकि वे बहुत कम उम्र से तबला सीख और बजा रहे थे, इसलिए उन्होंने कम उम्र से ही मंच पर प्रदर्शन करना शुरू कर दिया था। लतीफ अहमद खां साहब सन 1950 में मुंबई में आयोजित कार्यक्रम में अपने

एकल वादन से रातों-रात चर्चित हो गए। लतीफ खां साहब ने उस्ताद इनाम अली खां, उस्ताद अल्लारक्खा, पंडित सामता प्रसाद, और उस्ताद अमीर खां जैसे- सिद्ध कलाकारों की उपस्थिति में अपने स्वतंत्र वादन से खूब वाहवाही लूटी।

खां साहब भारत एवं अन्य कई देशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन कर चुके थे। उन्होंने कई महान कलाकारों के साथ संगत भी की। खां साहब ने भारत के सभी प्रमुख संगीत और नृत्य महोत्सवों में तबला वादन किया था। उन्होंने स्वतंत्र वादन के साथ-साथ कई महान कलाकारों के साथ भी तबला वादन किया था। खां साहब अपने नृत्य संगत के लिए बहुत प्रसिद्ध थे। उस्ताद लतीफ खां साहब कत्थक नृत्य के साथ लाजवाब संगत करते थे। खां साहब ने कथक नृत्य के एक से एक श्रेष्ठ दिग्गज कलाकारों के साथ सफल संगत कर बहुत ख्याति प्राप्त की है। इन्होंने सितारा देवी, पंडित बिरजू महाराज, पंडित दुर्गालाल जी, डांसर महाराज कृष्ण कुमार जैसे महान कलाकारों के साथ खूब संगत की है। खां साहब के समय में जैसी संगत नृत्य के साथ उन्होंने की वैसी संगत करने वाला उनके समय में कोई अन्य कलाकार नहीं था। ऐसे बेजोड़ और लाजवाब संगत थी उनकी।

खां साहब दिल्ली घराने के खलीफा तबला वादक थे जिनकी तबले को लेकर बहुत अच्छी सोच थी और तबले को लेकर उन्होंने बहुत शोध किया था। उनकी उंगलियां तबले पर ऐसे थिरकती थी जैसे मानो कोई स्प्रिंग लगा हो। खां साहब दायें के साथ-साथ उनके अनुसार स्वर में बायें अर्थात् डग्गे को भी स्वर में मिलाते थे। जिस स्वर सप्तक पर गायन, वादन, नृत्य आदि क्रिया चल रही है उसी स्वर सप्तक में किसी न किसी स्वर में उनका डग्गा मिला होता था जैसे वे 'ग म प' किसी भी एक स्वर में अपना डग्गा मिलाते थे।

<u>खां साहब के व्यक्तिव की विशेषतायें-</u>

खां साहब के तबले में उनके श्रम के साथ-साथ उनका चरित्र और उनकी रूह भी बोलती थी। तबले पर उनकी निपुणता तो सर्वोपरि थी ही साथ ही उनका व्यक्तित्व अद्भुत विशेषताओं का संगम था। खां साहब सदाचारी और अत्यंत विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे। यह भी कहा जाता है कि जैसा व्यक्ति का व्यक्तित्व होता है, वैसे ही उसकी कला भी होती है। इस विषय से संबंधित विभिन्न विद्वानों का मानना है कि खां साहब बहुत विनम्र और हंसमुख प्रवृत्ति के व्यक्ति थे और शोध के माध्यम से ज्ञात हुआ कि खां साहब का तबला बहुत कर्णप्रिय, मनमोहक, आनंदमयी और संगीतात्मकता लिए हुए था।

लतीफ खां साहब का स्वभाव ऐसा था कि वे जिस किसी से भी एक बार मिलते थे उसे सदैव के लिए अपना बना लेते थे। खां साहब मस्त मौला और बेहद हंसमुख स्वभाव के धनी व्यक्ति थे। इन्हें चुटकुले सुनाने का बहुत शौक था। तो हर कोई इनसे कहता था आपका नाम तो लतीफा होना चाहिए था क्योंकि आप इतने अच्छे- अच्छे लतीफे (चुटकुले) जो सुनाते हैं। लतीफ खां साहब, इमरत खां, महमूद मिर्जा साहब ये सभी एक साथ बैठकर खूब मजाक किया करते थे।

आपके स्नेही, सहृदय स्वभाव के कारण आप हर किसी को अपना बना लेते थे। वे जब भी किसी से मिलते थे तो ऐसा लगता था जैसे मानो सबसे ज्यादा मोहब्बत वे उसी व्यक्ति से करते हैं। खां साहब को अपनी कला का बिल्कुल घमंड नहीं था। वे हर किसी से प्यार मोहब्बत करना, बच्चों से खूब हंसी मजाक करना और कभी किसी को यह भी ना जताना कि वे कितने बड़े कलाकार हैं ऐसी सकशियत थे। सबके साथ नीचे जमीन पर बैठकर भोजन करना और बड़ों से सदैव आदर से बात करना ऐसा उनका व्यवहार था। खां साहब सबके साथ मित्रवत व्यवहार करते थे चाहे वे उनसे बड़ा हो या छोटा। नौशाद खां साहब लतीफ खां साहब से छोटे थे तब भी लतीफ खां साहब नौशाद खां को पूर्ण सम्मान दिया करते थे। खां साहब की सह्रदयता का परिचय इस बात से पता चलता हैं कि वे हमेशा दूसरो की मदद करने के लिए तैयार रहते थे।

उस्ताद लतीफ अहमद खां की सोच सकारात्मक थी। खां साहब इतने सरल और सुलझे व्यक्ति थे कि उनका किसी से कभी भी किसी बात पर कोई वाद-विवाद नहीं होता था। वे सिर्फ अपने काम से काम रखते थे।

<u>खां साहब के शौक अथवा विशिष्ट अभिरुचियाँ-</u>

ताशा बजने के शौक़ीन- खां साहब इबादत के तौर पर ताशा भी बजाया करते थे। जब ताजिया निकलते थे तब खां साहब पूरी-पूरी रात ताशा बजाया करते थे। उस्ताद ताशे पर झपताल, रूपक इत्यादि ताले बजाते थे। लोग ताजिया में रुक-रुककर खां साहब की ताशे पर भिन्न-भिन्न लयकारियां सुनते थे।

रेडियो के शौकीन– सुदीप मुखर्जी जी बताते हैं कि खां साहब को लगभग दुनिया के सभी रेडियो चैनल का पता था। उन्हें पता था कि कब किस चैनल पर क्या आता है और यह बात सुदीप मुखर्जी जी को तब पता चली जब खां साहब की आंखों का ऑपरेशन हुआ था और वे रात भर उनके पास रुका करते थे। तब पूरी रात उन्होंने कहा सुदीप यह चैनल लगाओ इस पर यह गीत आ रहे होंगे कभी कहते सुदीप वह दूसरा चैनल लगाओ उस पर न्यूज़ आ रही होगी और ऐसे ही पूरी रात जागकर खां साहब रेडियो सुनते रहे। इतना शौक था उन्हें रेडियो का।

पुराने कलाकारों के रिकार्ड्स सुनने के शौकीन– दिल्ली में लालकिले के पीछे जामा मस्जिद के पास एक पुराना बाजार लगता था। वहां पुरानी चीजें मिलती थी। वही पुराने कलाकारों के रिकॉर्ड्स भी मिलते थे। खां साहब वहां जाकर हद्दू खां, हस्सू खां, केसरबाई केरकर, मोंगू खां जैसे कलाकारों के रिकार्ड्स लेकर आते थे और उन्हें बड़े शौक से सुनते थे।

सभी घरानों के कलाकारों को सुनने के शौकीन– खां साहब केवल दिल्ली के तबले के घराने के जानकार नहीं थे अपितु उन्हें गायन, वादन तथा नृत्य सभी विधाओं के घरानों के जानकार थे। क्योंकि वे सभी घरानों के कलाकारों को सुनने व देखने का शौक रखते थे। वे बड़े-बड़े कलाकारों के रिकार्ड्स (कैसेट) इत्यादि खरीद कर खूब सुना करते थे।

पुरस्कार एवं उपलब्धियाँ- खां साहब एक सच्चे देशभक्त और जिम्मेदार नागरिक थे। उन्होंने हमेशा अपने दर्शकों को देश के बारे में जागरूक किया। हमारे भारतीय शास्त्रीय संगीत में कई ऐसे संगीतकार हैं जिनके लिए पुरस्कार मायने नहीं रखते। उनके लिए उनका अहम पुरस्कार उनका संगीत है। हम उन कलाकारों को क्या पुरस्कार दे सकते हैं जिन्होंने संगीत के लिए अपना जीवन दे दिया। हमारे भारतीय शास्त्रीय सगीत में धार्मिक विचारधारा है कि संगीत संगीतकार के लिए आध्यात्मिक साधना है। इसकी तुलना किसी पुरस्कार से कभी नहीं की जा सकती। ऐसे बहुत से महान कलाकार हैं जिन्होंने बड़े- बड़े पुरस्कार को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। हमारे उस्ताद विलायत खां महान सितार वादक को जब भारत सरकार ने वर्ष 1964 और 1968 में क्रमशः पदम श्री और पद्म भूषण पुरस्कार देना चाहा तो उन्होंने इनकार कर दिया। तबला वादन खां साहब के लिए केवल एक ससाधना नहीं थी बल्कि उनके लिए एक धर्म था। पुरस्कार और प्रशंसा एक संगीतकार के लिए नाम मात्र के लिए है। कई महान कलाकारों की सूची है जिन्हें कभी कोई बड़ा पुरस्कार नहीं मिला, लेकिन आज कई पुरस्कार प्रतिभाशाली संगीतकार को उनके नाम से दिए जाते हैं। खां साहब को अक्सर कई संगीत समर्पित संस्थाओं द्वारा सम्मान दिया गया उनका मुख्य पुरस्कार हर जगह से मिलने वाला आदर सम्मान था। खां साहब उस स्तर के कलाकार थे कि आकाशवाणी ने उन्हें बिना किसी ऑडिशन के टॉप ग्रेड कलाकार की मान्यता प्रदान की थी। खां साहब आकाशवाणी में अक्सर वरिष्ठ विशेषज्ञ के रूप में बैठते थे। यद्यपि खां साहब एक बहुत प्रसंशित तबला वादक थे लेकिन अपनी कला की सफलता के लिए किसी भी प्रमाणिकता को प्राप्त करने के लिए कभी प्रयास नहीं करते थे। उनके लिए सफलता एक अदायगी थी, कड़ी मेहन एक निवेश था। खां साहब का नाम भारत के अग्रणी तबला वादक में लिया जाता है। उनके नाम का उल्लेख कई परीक्षा की पुस्तकों में मिलता है। लेकिन उन्होंने कभी भी किसी भी भौतिकवादी उपलब्धि को पुरस्कार के रूप में नहीं जोड़ा। क्योंकि वे उच्च अध्यात्मिकरण के लिए अपना तबला वादन करते थे। खां साहब को सभी बड़े बड़े कलाकार जैसे पंडित किशन महाराज, सामता प्रसाद व कोलकाता के सभी जाने-माने कलाकार बहुत मानते थे। यही खां साहब का मान-सम्मान और उपाधियाँ थी।

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि कोई बड़ा सम्मान एवं पुरस्कार खां साहब की कम उम्र में मृत्यु हो जाने के कारण उन्हें नहीं प्राप्त हो सका। खां साहब के संगीत जगत को कम उम्र में अलविदा कर देने के कारण संगीत नाटक अकादमी, पदम श्री इत्यादि सम्मानों से भी वंचित रह गये। खां साहब तो एक शख्सियत थे जिनके व्यक्तित्व पर ऐसे सम्मान व पुरस्कारों के मिलने न मिलने से कोई फर्क नहीं पड़ता। असल सम्मान तो वह है जो कलाकार उन्हें दे रहे हैं, समाज दे रहा है और यही उनका सम्मान है कि आज उनके जीवन और उनके द्वारा किए गए कार्यों पर शोध किया जा रहा है।

खां साहब के पुत्रों को पचासवें कला विहार वार्षिकोत्सव में खां साहब के नाम का सम्मान दिया गया।

सम्मान- Ustad Latif Ahmad Khan Smriti Samman to Akbar Latif and Babar Latif.

सांगीतिक योगदान- दिल्ली घराने के उस्ताद लतीफ अहमद खां साहब का तबला स्वतंत्र वादन में बहुमूल्य योगदान रहा है। वे बहुत परिश्रमी और निष्ठावान कलाकार थे। लतीफ खां साहब चाहे सोलो बजाते या संगत वे सभी विधाओं में एक नंबर थे। उन्होंने सोलो व संगत दोनों में महारथ हासिल की हुई थी।

उस्ताद लतीफ खां अपने अक्षय कोष से अनेक योग्य शिष्यों को मुक्त हस्त से संगीत विद्या का महादान कर देश को कई महान संगीतकार दिए। आपके शिष्यों की एक लंबी श्रृंखला है- रहीस अहमद, मनोज नागर, राशिद जफर, दिव्यांग वकील, सुदीप मुखर्जी, विशाल नागर, वीरम जसानी, अहमदाबाद के मिस्टर गाँधी, इत्यादि मनोज नागर खां साहब के काफी सीनियर शिष्य रहे हैं

कई विदेशी शिष्यों को भी आपने शिक्षा देकर आपने तबला वादन कला को विदेशो में भी भारतीय संगीत कला को आगे बढ़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। आपके विदेशी शियों में [टैड [फ्रांस], डेनियल (फ्रांस), टॉस [नीदरलैंड] आदि के नाम शामिल हैं।

बिर्मिघम में मिडलैंड्स आर्ट सेंटर है, जहाँ खां साहब ने तबला सिखाया, उन्होंने तीन शिष्य बनाये- हसमुख दास, गुरदीप सिंह, जगदीप मुदन।

ताल एवं बंदिशों की रचना- लतीफ़ खां साहब ने ताल और कई बंदिशों की भी रचना की। खां साहब ने लतीफ़ नाम की एक ताल की रचना की। जिसकी तीन मात्रा ठा में, दो मात्रा दुगुन में और डेढ़ का दुगुन पौने एक मात्रा में किया था।

लतीफ़ ताल का ठेका-

धिं तिरकिट धिं। धातीना । धाधीना । धि

Ustad Latif Ahmed Khan created this 5 1/4 beat. The division is 3 +11/ 2 + 3/4 + 5 1/4

Each division is twice as fast the prior. One normal speed, double speed, quadruple speed.

As- 123| 1 2 3| 1 2 3|

तीनताल में कायदा -

धाऽधाऽ ऽधेतिट धेतिटधा गेनाधाति । धागेनाधा तिधागेना धतिधागे तिनकिन ।

X 2

ताऽताऽ ऽतेतिट तेतिटता गेनाताति । धागेनाधा तिधागेना धतिधागे धिनगिन ।

0 3

सांगीतिक दल कि स्थापना- खां साहब ने 'द ड्रम ऑफ इंडिया' नामक संगीत दल बनाया जिसमें श्रीलंका में भारतीय गणतंत्र दिवस के अवसर पर प्रस्तुति देने के साथ-साथ कई अन्य देशों में भी अपना कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

फिल्मों में संगीत- खां साहब की चित्रपट संगीत में बहुत डिमांड थी। संगीत निर्देशक मदनमोहन जिन्होंने गीत 'आपकी नजरों ने समझा प्यार के काबिल हमें' का निर्देशन किया है, उन्होंने स्वयं ही लतीफ खां साहब को फिल्मों में तबला वादन का प्रस्ताव दिया। खां साहब ने कई फिल्मों के गीतों पर तबला बजाया है जिसमें कुछ के नाम इस प्रकार हैं-

	फिल्म	गीत
1.	बावर्ची	भोर आये गया अंधियारा

इस गीत में कत्थक के कई पीस है जिस पर लतीफ खां साहब ने तबला बजाया है।

2.	प्रेम रोग	ये प्यार था या कुछ और
3.	भाई हो तो ऐसा	सुन ले मेरे देवता

विधि का विधान- 45 वर्ष की उम्र के बाद खां साहब का स्वास्थ्य कुछ ठीक नहीं रहता था। फिर भी वे सदैव सक्रिय रहते थे। फिर एक दिन ऐसा हुआ कि दिल्ली घराने के इस जाज्वल्यमान महान सितारे का निधन ह्रदय गति रुक जाने के कारण 29 अगस्त सन 1989 को दोपहर के 12:10 पर हो गया। दुर्भाग्य से उस्ताद लतीफ खां साहब की मृत्यु मात्र 48 वर्ष की कम आयु में ही दिल्ली में हो गई।

उस्ताद लतीफ अहमद खां साहब एक ऐसे सौभाग्यशाली ऐतिहासिक और दिग्गज कलाकार में से एक थे जिन्हें अपने संगीतिक जीवन काल में अप्रतिम लोकप्रियता यश एवं सम्मान प्राप्त हुआ। खां साहब का जीवन कुछ मूलभूत विशेषताओं से परिपूर्ण था। धार्मिक व्यक्तित्व, मां के प्रति विशेष सम्मान, गुरु भक्त, स्नेही, हंसमुख, स्वाभिमानी, दयावान, भावुक, शांत स्वभाव आदि ये समस्त विशेषतायें खां साहब के व्यक्तित्व को एक महान व्यक्तित्व बनाती हैं। खां साहब ने तबला वादन कला को बहुत दूर-दूर तक प्रशिद्ध किया। और अपने तबले की नृत्य के साथ संगत के लिए पूरे जहाँ में डंका बजा दिया।

वे भारतीय संगीत के इतिहास में सदैव एक अग्रिणी और प्रतिभाशाली तबला वादक कहलाये और आगे भी वे अपनी कला के माध्यम से सबके दिलों में अमर रहेंगे। अर्थात चिरंजीवी उस्ताद लतीफ़ अहमद साहब का नाम संगीताकाश में सदैव के लिये प्रतिष्ठा के सोपानों पर चमकता रहेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. संगीत तबला अंक संस्थापक प्रभुलाल गर्ग, वर्ष 501, अंक 12
2. तबले का उद्गम एवं दिल्ली घराना जनवरी-फरवरी
3. उस्ताद गुलाम हैदर खां के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी
4. उस्ताद आसिफ अली खां के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

5. तबला एक समग्र वाद्य, डॉ० सीमा चौधरी

6. बाबर लतीफ़ के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

7. दिल्ली घराने का संगीत में योगदान, रमेश मिश्र

8. सुदीप मुखर्जी के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

9. पंडित राममोहन मिश्र के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

10. अकरम खां के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

11. नौशाद खां के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

12. साजन मिश्र के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

13. कुमार ऋषितोष के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

14. वीरम जसानी के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

15. पराग सदाफल के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

16. मंजुश्री चटर्जी के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

17. जगदीप मुदन के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

18. गोविन्द चक्रवर्ती के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

19. रहीस खां के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

20. मनोज नागर के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

21. अकबर लतीफ़ के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी

22. 50th KALA VIHAR VARSHIKOTSAV 2nd -4th March, 2008

23. तबला सिद्धांत, भीमसेन सरल

24. आशीष सेन गुप्ता के सक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी